[http://srimadhvyasa.wordpress.com/https://sites.google.com/site/srimadhvyasa/](http://srimadhvyasa.wordpress.com/https:/sites.google.com/site/srimadhvyasa/)

॥ ईशावास्योपनिषद्भाष्यम

्॥

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| नित्यानित्यजगद्धात्र | | | | | | ेनित्याय ज्ञािमू | | |
| प | र्ा | ितन्दाय हरय ेसवयतज्ञभ | | | | | जुेिमः ॥ | |
| यस्माद्ब्रह्म | | | | न्द्रररुद्रानिि | | | श्रीयोऽनप च। | |
| ज्ञािःस्प | | | नूर् | | ःतसिा र्स्म ैहरय ेग | | | रुवेिमः ॥ |

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| स्वायम्भ | वुो मि | रुे | | त |  | गतवन्तमाक | | ूनर्सिू | यज्ञिामाि ां | | र् | ष्टाव - |
| ‘स्वायम् | वुः स्विौनहत्र ां | | | | | | यज्ञानभि ां | | ःु। | |  |  |
|  |  |  |  |  | ष्टावावनहर्ात्मिा ॥ | | | |  |  |  |  |
| रक्षोनभरुग्ःैसम्प्राप्तः खानिर् | | | | | | |  |  |  |  |  |  |
| स्तोत्र ां | त्व ैयज्ञिेर्ाि | | | | हत्वाऽवध्यर्ाां | | | |  | ॥् |  |  |
|  | स्तषेामवध्यत्वां | | | | | | | ःु। |  |  |  |  |
| त | र्थाऽन्यषेामर्ः कोऽन्यो हरःेप्रभ | | | | | | | | | ःु॥’ इनर् ब्रह्माण्ड े | | |
| भागवर् ेचायमथ | | | तएव | उक्तः। | | |  |  |  |  |  |  |

ईषावास्योपनिषर्

्

ईशावास्यनमि

ां

ंयर्

नकञ्च जगत्या

जगर्

।्

र्

िेत्यक्तेि भ

ञ्जीथा मा ग

धृः कस्यनस्वि

्धिम

॥्01 ॥

भाष्यम

-्ईशस्यावासयोग्यमीशावास्यम।्जगत्या ां

ृर्ौ। र्िेईशिेत्यक्तेि - ित्तिेभ

ञ्जीथाः।

"स्वर्ः प्रव

त्त्यशक्तत्वािीशावास्यनमिां

।्

प्रव

त्तय ेप्रकृनर्ग ां

स्प्रकृर्ीश्वरः।

र्िधीिप्रव

ृत्तत्वार्

र्िीय ां

मतवेयर्

।्

र्द्दत्तिेवैभ

ञ्जीथा अर्ो िान्य ां

र्

।्" इनर् ब्राह्म े॥01॥

ाः श्रीमदाचारााः सन्त ुमेजन्म जन्मनि॥गुरुभावंव्रञ्चरन्न्त भानत श्री जरतीर्वयाक्॥कृष्ण ंवन्देजगद्गरुम ्॥

Page 3